डॉ० बाबा साहब आंबेडकर विश्वविद्यालय के द्वितीय दीक्षान्त समारोह में गुजरात के माननीय राज्यपाल श्री ओ०पी० कोहली जी का अभिभाषण। (१६ अप्रैल, 2017)

- आज के इस अवसर पर मैं उन छात्र–छात्राओं को बधाई देना चाहूंगा जिन्हें पदवी तथा मेडल प्राप्त हुए हैं। उन्होंने यूनिवर्सिटी की परीक्षा उत्तीर्ण करके जीवन के परिक्षेत्र में प्रवेश किया है। यूनिवर्सिटी में रहते हुए उन्होंने जो साधना की थी, उस साधना का प्रयोग एवम् क्रियान्वयन उन्हें जीवन के बड़े क्षेत्र में प्रवेश करके करना है। मुझे इस बात पर पूरा विश्वास है कि इस यूनिवर्सिटी ने जिन छात्र–छात्राओं को तैयार किया है, वे अपने जीवन–संग्राम में निश्चित रूप से सफल होंगे तथा चुनौतियों का साहसपूर्वक सामना करेंगे।
- आज मैं इस यूनिवर्सिटी के कुलपति डॉ० पंकज जानी जी तथा उनके सहयोगियों को भी बधाई देना चाहूँगा जिन्होंने इस यूनिवर्सिटी के २२ वर्षों के इतिहास में केवल पिछले वर्ष ही शुरू हुई दीक्षान्त समारोह की परम्परा का पालन करते हुए दूसरे वर्ष में भी दीक्षान्त समारोह का सफलतापूर्वक आयोजन किया है।

- आज हम इस दीक्षान्त समारोह में डॉ० बाबा साहेब आंबेडकर ओपन यूनिवर्सिटी द्वारा कार्यान्वित ज्ञानयज्ञ की पूर्णाहुति के साक्षी बने हैं। पदवी ग्रहण करने के लिए आपने जो कुछ भी यहाँ सीखा है उसका अपने वास्तविक जीवन में सही उपयोग करके अपने अनुभवों को समृद्ध करेंगे तथा इस ज्ञानयज्ञ को निरन्तर आगे बढ+ाते रहेंगे, ऐसी मेरी आशा है।
- विश्वविद्यालय से एक बार जुड़ा हुआ विद्यार्थी हमेशा के लिए विश्वविद्यालय के साथ जुड़ा रहता है। निरन्तर अपडेट होती हुई यूनिवर्सिटी की वेबसाईट के जरिए यहाँ के छात्र विशेषज्ञों के व्याख्यानों की जानकारी प्राप्त करते रहेंगे, ऐसा मैं मानता हूँ। मुझे यह कहते हुए प्रसन्नता हो रही है कि इस यूनिवर्सिटी ने आधुनिक उपकरणों से पूरी तरह सज्ज उच्च कोटि का एक ऑडियो-विडीयो स्टुडियो अपने प्रांगण में ही विकसित किया है, जहाँ यूनिवर्सिटी में कार्यरत् अध्यापकों तथा बाहर से आए हुए विशेषज्ञों के विद्वतापूर्ण व्याख्यानों की आधुनिक तकनीकी से रेकोर्डिंग होती है और टी०वी० तथा चैनल ''बदले गुजरात'' के जरिये इस यूनिवर्सिटी की वेबसाईट पर आप यह सभी व्याख्यान सुन सकते हैं।
- मुझे बताया गया है कि इसी दिशा में एक कदम आगे बढ़ते हुए वर्चुअल क्लासरूम को विकसित करने की भी इस यूनिवर्सिटी की

योजना है। इसके जरिए अभ्यास केन्द्र पर बैठे हुए छात्र यूनिवर्सिटी के प्राध्यापकों से रूबरू होकर वैसे ही पढ़ सकेंगे जैसे पारंपरिक रूप से यूनिवर्सिटी कक्षा में पढ़ाया जाता है। दूरवर्ती शिक्षा के क्षेत्र में आधुनिकतम तकनीकियों का सूचित प्रयोग कितना सार्थक एवं गुणकारी सिद्ध हो सकता है, यह उपक्रम दूरवर्ती शिक्षा के क्षेत्र में एक नई ऊर्जा का समावेश करेगा।

- मुझे खुशी है कि यह यूनिवर्सिटी गुजरात राज्य में वैकल्पिक शिक्षा का सशक्त माध्यम बनती जा रही है। गुजरात राज्य में पारंपरिक विश्वविद्यालयों में किसी भी कारण से शिक्षा प्राप्त करने से वंचित विद्यार्थियों के लिए यह विश्वविद्यालय गुणवत्तायुक्त उच्च शिक्षा के अवसर प्रदान करके उन्हें अपने कार्यक्षेत्र में आगे बढ+ने की प्रेरणा दे रहा है। पिछले दीक्षान्त समारोह में पदवी प्राप्त करनेवाले सफल विद्यार्थियों की संख्या 4500 के करीब थी, वहीं इस वर्ष छात्रों की संख्या 6000 के करीब पहुँच गई है।
- मुझे जानकारी दी गई है कि इस विश्वविद्यालय ने इस वर्ष से पूरे गुजरात राज्य को 7 regions में बाँटा गया है जहाँ हर region का कोई–न–कोई senior अध्यापक supervision करता है और उस region में आनेवाले अभ्यास केन्द्रों से तथा उनके विद्यार्थियों से वह सीधा जुड़ जाता है। विद्यार्थियों के सामने कोई

भी समस्याएँ आए तो वे सीधे अपने region में फोन करके तत्काल उसका समाधान पा सकते हैं । यह विचार बहुत ही सराहनीय है।

- मुझे इस बात का आनंद है कि यह यूनिवर्सिटी उच्च अभ्यासक्रम के प्रति पूरी तरह से समर्पित है। IGNOU के साथ मिलकर एक अन्तर्राष्ट्रीय संगोष्ठी आयोजित करके पारस्परिक सहयोग से उपयोगी नये पाठ्यक्रम सुनिश्चित करने पर भी यहाँ विचार हो रहा है। साथ–ही सांस्कृतिक कार्यक्रमों के आयोजनों के जरिये भी एक सुखद माहौल बनाने का प्रयास यहाँ हो रहा है। इस दृष्टि से यह विश्वविद्यालय अपनी एक अनोखी पहचान बनाता जा रहा है, जो प्रशंसा के योग्य है।
- मैं आज के इस अवसर पर इस यूनिवर्सिटी के कुलपति जी के नेतृत्व का तथा उनकी Team की कर्मठता का अभिवादन करते हुए उन्हें शुभकामनाएँ देता हूँ। विद्यार्थियों से भी मैं अपेक्षा करता हूँ कि वे उत्तरोत्तर प्रगति की नई सीमाओं को लांघकर अपने राष्ट्र व प्रदेश के विकास में नये कीर्तिमान स्थापित करें।
- अभी दो दिन पहले ही डॉ० बाबा साहेब आंबडेकर की जयंती को पूरे देश में और विश्व के अनेक स्थलों पर मनाया गया। डॉ० आंबेडकर का नाम इस विश्वविद्यालय के नाम के साथ जुड़ा

हुआ है, ऐसी स्थिति में इस विश्वविद्यालय से उपाधि लेकर बाहर जानेवाले छात्रों का यह कर्तव्य बनता है कि डॉ० बाबा साहेब आंबडेकर के उन आदर्शों को क्रियान्वित करने का प्रयास करें, जिन आदर्शों के लिए बाबा साहेब आंबेडकर जीये थे। आज़ादी के 70 वर्ष पूरे होने जा रहे है, फिर भी हमें समाज में विषमता, ऊच-नीच का भेद और अस्पृश्यता, जातिप्रथा, जाति जाति में बनी वैमनस्य इत्यादि कई प्रवृत्तियाँ दिखाई देती हैं। हमारी युवाशक्ति को इन प्रवृत्तियों के खिलाफ लड़ने के लिए आगे आना चाहिये तथा डॉ० आंबेडकर जी के समरसता के दर्शन को पूरे समाज में उजागर करना चाहिये। मैं मानता हूँ कि यहां से उपाधि प्राप्त करनेवाले आप सभी छात्र-छात्राएँ सामाजिक समरसता के मार्ग पर आगे बढ़ेंगे। आप सभी को बहुत-बहुत धन्यावद तथा शुभकामनाएँ।

जय हिन्द ।